

लाओदिकिया - नंबर तीन

नियम क्या हैं?

Jeff Pippenger

2023-08-30

हमें स्वयं यह जानना चाहिए कि ईसाई धर्म का वास्तविक स्वरूप क्या है, सत्य क्या है, जो विश्वास हमें प्राप्त हुआ है वह क्या है, और बाइबल के नियम क्या हैं—वे नियम जो हमें सर्वोच्च अधिकार से दिए गए हैं। The 1888 Materials, 403.

कई वर्षों से Future for America ने यह पहचाना है कि प्रकाशितवाक्य की सात कलीसियाएँ न केवल प्रेरितों के समय से लेकर संसार के अंत तक के आधुनिक इस्राएल के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती हैं, बल्कि ये सात कलीसियाएँ मूसा के समय से लेकर Stephen को पत्थरों से मारे जाने तक के प्राचीन इस्राएल का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। एडवेंतवाद के अग्रदूतों ने इस सत्य को नहीं सिखाया, पर वे उन सिद्धांतों को समझते थे और उनका प्रयोग करते थे जो इस सत्य की स्थापना करते हैं। यीशु आरंभ से ही अंत को प्रकट करता है, और प्राचीन इस्राएल आधुनिक इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है। अतः आधुनिक इस्राएल की भविष्यसूचक विशेषताओं का जो भी सत्य है, वह प्राचीन इस्राएल में भी विद्यमान था।

मिलराइट इतिहास से पहले, सात कलीसियाओं के बारे में पारंपरिक ईसाई दृष्टिकोण यह था कि वे यूहन्ना के समय एशिया माइनर में मौजूद वास्तविक कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करती थीं। पारंपरिक दृष्टिकोण यह भी मानता था कि अलग-अलग कलीसियाओं को दिया गया परामर्श समूचे ईसाई इतिहास में विभिन्न कलीसियाओं के लिए विशिष्ट परामर्श के रूप में भी समझा जा सकता है, और यही परामर्श व चेतावनियाँ व्यक्तिगत ईसाइयों के लिए भी हैं। उन्होंने यह भी समझा कि सात कलीसियाएँ शिष्यों के समय से लेकर संसार के अंत तक कलीसियाई इतिहास के सात कालखंडों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये दृष्टिकोण मिलराइट इतिहास से पहले के थे। सात कलीसियाओं के संबंध में ये चार मान्यताएँ—जो विलियम मिलर से पहले की पारंपरिक दृष्टि का हिस्सा थीं—बाइबल की 'इतिहासवादी' व्याख्या पर आधारित थीं और हैं। उसी पद्धति को अपनाने के लिए परमेश्वर के स्वर्गदूतों ने विलियम मिलर का मार्गदर्शन किया।

एशिया की सात कलीसियाएँ मसीह की कलीसिया का इतिहास हैं—उसके सात रूपों में, उसके सभी उतार-चढ़ावों में, उसकी समृद्धि और विपत्तियों के सारे दौर में—प्रेरितों के दिनों से लेकर जगत के अंत तक। सात मुहरें पृथ्वी के सत्ताधारियों और राजाओं द्वारा कलीसिया के संबंध में की गई कार्यवाहियों का इतिहास हैं, और उसी समय अपने लोगों की परमेश्वर द्वारा की गई रक्षा का भी। सात तुरहियाँ पृथ्वी पर, या रोमी राज्य पर, भेजे गए सात विशिष्ट और भारी दण्डों का इतिहास हैं। और सात कटोरे पापल रोम पर भेजी गई सात अंतिम विपत्तियाँ हैं। इनके साथ अनेक अन्य घटनाएँ भी मिली हुई हैं, जो सहायक धाराओं की तरह इनमें बुनी गई हैं, और भविष्यवाणी की उस महान नदी को भरती जाती हैं, जब तक कि सब मिलकर हमें अनंतता के महासागर तक न पहुँचा दें।

"यह, मेरे विचार में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जॉन की भविष्यवाणी की रूपरेखा है। और जो व्यक्ति इस पुस्तक को समझना चाहता है, उसे परमेश्वर के वचन के अन्य भागों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। इस भविष्यवाणी में प्रयुक्त प्रतीक और रूपक सब के सब उसी में नहीं समझाए गए हैं, बल्कि उन्हें अन्य भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में ढूँढ़ना होगा और पवित्रशास्त्र के अन्य अंशों में उनकी व्याख्या मिलती है। इसलिए यह स्पष्ट है कि किसी भी भाग का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी, परमेश्वर ने ऐसा ठहराया है कि संपूर्ण का अध्ययन किया जाए।" विलियम मिलर, मिलर के व्याख्यान, खंड 2, व्याख्यान 12, 178.

बहन व्हाइट मिलर द्वारा धारण किए गए "इतिहासवादी" दृष्टिकोण से सहमत हैं और उसका समर्थन करती हैं, परन्तु उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के संबंध में मिलर से भी गहरी अंतर्दृष्टि जोड़ी, क्योंकि मिलर ने पवित्रस्थान को उसके वास्तविक रूप में नहीं पहचाना था। वह पवित्रस्थान को पृथ्वी समझते थे। बहन व्हाइट ने यह पहचाना कि जब यीशु ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दर्शाई गई भविष्यवाणियाँ प्रस्तुत कीं, तो मसीह यह सब अपने स्वर्गीय महायाजक के रूप में अपने कार्य के साथ मिलकर कर रहे थे।

जब जॉन मुड़कर मसीह को देखता है, वह याजकीय वस्त्रों में दीपदानों के बीच चल रहा है। वे दीपदान पवित्र स्थान में हैं; अतः यह उसके स्वर्गरोहण के बाद, पर 1844 में उसके अति-पवित्र स्थान में प्रवेश करने से पहले का ऐतिहासिक काल है। मिलर इस वास्तविकता के महत्त्व को नहीं समझ सकते थे; न ही टिंडेल, लूथर, जॉन वाइक्लिफ या अन्य कोई प्रारंभिक सुधारक। सत्य प्रगतिशील है; वह परिपूर्ण दिन तक और अधिक, और भी अधिक प्रकाशमान होता जाता है।

रॉबिन्सन और रोजर विलियम्स द्वारा बड़े साहस और गरिमा के साथ प्रतिपादित महान सिद्धांत—कि सत्य प्रगतिशील है, कि मसीही जन परमेश्वर के पवित्र वचन से चमकने वाली हर ज्योति को ग्रहण करने के लिए सदैव तत्पर रहें—उनके वंशजों की दृष्टि से ओझल हो गया। अमेरिका की प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ—और यूरोप की भी—जो सुधार-आंदोलन के आशीर्वाद प्राप्त करने में अत्यंत विशेष कृपा की भागी बनी थीं, सुधार के मार्ग पर आगे बढ़ने में असफल रहीं। यद्यपि समय-समय पर कुछ विश्वासयोग्य पुरुष उठे, जिन्होंने नई सच्चाइयों का उद्घोष किया और लंबे समय से संजोई हुई भ्रांतियों को उजागर किया, तो भी बहुसंख्यक लोग—मसीह के दिनों के यहूदियों या लूथर के समय के पोपवादियों की भाँति—इस पर संतुष्ट रहे कि जैसे उनके पितरों ने विश्वास किया था वैसा ही वे भी मानें, और जैसे वे जीए थे वैसे ही वे भी जीएँ। इसलिए धर्म फिर से औपचारिकता में पतित हो गया; और वे भूलें और अंधविश्वास, जिन्हें कलीसिया यदि परमेश्वर के वचन की ज्योति में चलती रहती तो त्याग दिया गया होता, बनाए रखे गए और यहाँ तक कि संजोए भी गए। इस प्रकार सुधार-आंदोलन से प्रेरित आत्मा धीरे-धीरे क्षीण होती-होती लगभग लुप्त हो गई, यहाँ तक कि प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं में सुधार की आवश्यकता लगभग उतनी ही बढ़ गई जितनी लूथर के समय रोमन कलीसिया में थी। वही सांसारिकता और आत्मिक जड़ता, मनुष्यों के मतों के प्रति वैसा ही आदर, और परमेश्वर के वचन की शिक्षाओं के स्थान पर मानवीय सिद्धांतों का प्रतिस्थापन था। महान विवाद, 297।

यदि इस तथ्य को नहीं पहचाना जाता कि सत्य इतिहास भर क्रमशः विकसित होता है, तो इस अंतिम पीढ़ी में किसी भी नई रोशनी के महत्त्व को पहचान पाना शायद असंभव हो जाएगा। जब कोई व्यक्ति "सत्य" की प्रगतिशील प्रकृति को समझना बंद कर देता है, तो वह स्वतः ही परंपराओं, रीति-रिवाजों और पतनशील मानवीय मार्गदर्शन पर निर्भर होने लगता है।

मिलर द्वारा अपनाई गई कार्यप्रणाली एक ऐसा मार्गचिह्न है जो पूरी भविष्यवाणी की रेखा में व्याप्त है, और जो प्रेरितों से आरंभ हुई बाइबिलीय सत्य की विकास-यात्रा की गवाही प्रस्तुत करता है। फिर भी, मिलर द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए उस मार्गचिह्न में हम एक ऐसा आरंभ पाते हैं, जिसका अंत में एक समकक्ष होना अपेक्षित है। अधिकांश लोग इन वास्तविकताओं को कभी नहीं समझते, पर शैतान के साथ ऐसा नहीं है।

शैतान ने स्वर्ग में अपने विद्रोह के समय से ही सत्य और उसके विकास का विरोध किया है। जब इतिहास में वह समय आया कि सुधारकों ने यह स्पष्ट रूप से समझना शुरू किया कि बाइबल का अध्ययन कैसे करना है, तो शैतान ने हमेशा की तरह वही किया और उसने नकली प्रतिरूप पेश कर दिए। सत्य की जालसाज़ी करने के उसके कार्य के ऐतिहासिक प्रमाण यह दर्शाते हैं कि रिबेरा और लुई डे अल्काज़ार जैसे जेसुइटों ने अपनी नकली कार्यप्रणाली विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विरुद्ध लक्षित की। उस विकृत कार्यप्रणाली, जिसे "प्रेटेरिज़्म" कहा जाता है, की शुरुआत दूसरी और तीसरी शताब्दियों में दो प्रमुख प्रतिनिधियों के साथ हुई। उनमें से एक कैसरिया के युसेबियस (260-339) थे, और दूसरा पेटाउ के विक्टोरिनस (लगभग 304 में मृत्यु) था। इन दोनों प्रारंभिक ऐतिहासिक व्यक्तियों ने उस कार्यप्रणाली को बढ़ावा दिया जो यह सुझाती थी कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक रोमन साम्राज्य के

समय में, कुख्यात सम्राट नीरो जैसे ऐतिहासिक व्यक्तियों के माध्यम से, पूरी हो चुकी थी।

उन्नीसवीं शताब्दी में यूनाइटेड किंगडम के जॉन डार्बी (1800-1882) ने एक और शैतानी पद्धति प्रस्तुत की, जिसे हमने पहले पहचानी गई 'स्कोफील्ड रेफरेंस बाइबल' नामक ट्रोजन हॉर्स बाइबल की पाद-टिप्पणियों में भी जोड़ा गया था। 'डिस्पेंसेशनलिज़्म' एक धर्मशास्त्रीय ढांचा है जो इतिहास और परमेश्वर के मानवता के साथ संबंध को अलग-अलग कालखंडों, या 'डिस्पेंसेशन्स,' में विभाजित करता है, जिनमें परमेश्वर अपनी योजना को अलग-अलग तरीकों से संचालित करते हैं। मैं यहाँ इसका उल्लेख करता हूँ क्योंकि यह उन असत्यताओं में से एक है जिन्हें उसी क्षेत्र से आई आवाज़ों ने, जहाँ डार्बी ने अपने शैतानी विचार फैलाए थे, प्यूचर फॉर अमेरिका के आंदोलन में प्रविष्ट कराया। डार्बी के वे विचार जिन्होंने प्यूचर फॉर अमेरिका पर आक्रमण किया, तथाकथित आधुनिक 'वोक' आंदोलन के दर्शन के साथ आए, जो फ्रांसीसी क्रांति द्वारा प्रदर्शित वही अराजकता और सदोम व गमोरा द्वारा प्रदर्शित वही उच्छृंखलता को बढ़ावा देता है।

आज आधुनिक एडवेंटिज़्म के धर्मशास्त्री बाइबल की सच्चाइयों को टुकड़ों में बाँटने की एक प्रणाली अपनाते हैं, जो बाइबिल की व्याख्या की दो-भागों वाली प्रणाली पर आधारित है, जिसका उपयोग वे बाइबल और भविष्यवाणी की आत्मा दोनों को कमजोर करने और अस्वीकार करने के लिए करते हैं। वे लोगों को या तो बाइबिल की भाषाओं के विशेषज्ञ या बाइबिल के इतिहास के विशेषज्ञ के रूप में मानते हैं। इस प्रकार, आज एडवेंटिज़्म के धर्मशास्त्री लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के मनो को नियंत्रित करते हैं—या तो परमेश्वर के वचन की व्याख्या एक गिरे हुए मनुष्य की इतिहास-समझ के आधार पर करके, या एक गिरे हुए मनुष्य की भाषा-समझ के आधार पर। त्रुटि के ये आधुनिक रूप, जिनका उपयोग अक्सर उस संदेश पर आक्रमण करने के लिए किया गया है जिसे आप अभी पढ़ रहे हैं, इन लेखों में आगे तब संबोधित किए जाएँगे जब हम फ्रांसीसी क्रांति के प्रतीकवाद पर विचार करेंगे। शैतान जीवित है, और वह जानता है कि उसका समय कम है। मिलर के नियमों का अंतिम नियम, संख्या चौदह, निम्नलिखित अनुच्छेद के साथ समाप्त होता है।

"हमारे विद्यालयों में पढ़ाया जाने वाला धर्मशास्त्र हमेशा किसी संप्रदायगत मत पर आधारित होता है। एक कोरे मन को लेकर उसमें इस तरह की बातें बिठा देना शायद चल जाए, लेकिन उसका अंत हमेशा कट्टरता में ही होगा। एक मुक्त मन कभी दूसरों के विचारों से संतुष्ट नहीं होगा। यदि मैं युवाओं को धर्मशास्त्र पढ़ाने वाला शिक्षक होता, तो पहले उनकी क्षमता और मति को परखता। यदि ये अच्छी होतीं, तो मैं उन्हें स्वयं बाइबल का अध्ययन करवाता और उन्हें मुक्त कर दुनिया की भलाई करने भेज देता। पर यदि उनमें मति ही न होती, तो मैं उन पर किसी दूसरे की मति की मुहर लगा देता, उनके माथे पर 'कट्टर' लिख देता, और उन्हें दास बनाकर भेज देता!" विलियम मिलर, मिलर के रचनासंग्रह, खंड 1, 24.

प्रकटकर्ता यूहन्ना के जीवन के तुरंत बाद के समय में, और धर्म-सुधार के दिनों में, शैतान लोगों को भ्रमित करने और सच्चे बाइबिलीय विश्लेषण को नष्ट करने के लिए सक्रिय रूप से झूठी भविष्यवाणी की पद्धतियाँ गढ़ रहा था। इन ऐतिहासिक तथ्यों में जो बात कभी-कभी अनदेखी रह जाती है, वह यह है कि वे सारी शैतानी पद्धतियाँ सीधे किसी और पुस्तक पर नहीं, बल्कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर ही लक्षित थीं। उसी पर इन शैतानी भ्रम के प्रवर्तकों में से हर एक ने ध्यान केंद्रित किया। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सदा से शैतान का निशाना रही है। शैतान जानता है कि उसे युद्ध उसी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विरुद्ध करना है। जब हम इस तथ्य को पहचानते हैं, तब हम एक और अदृश्य वास्तविकता को भी पहचान सकते हैं, जो एक अन्य महत्वपूर्ण सत्य से ढँक जाती है।

जेसुइटों की भ्रामक कार्यपद्धति का उद्देश्य यह रोकना था कि स्पष्ट रूप से समझा जा सके कि रोमन कलीसिया का पोप बाइबल की भविष्यवाणी का मसीह-विरोधी है। प्रत्येक प्रोटेस्टेंट सुधारक ने इस सत्य को पहचाना और चिन्हित किया। अतः जब Ribera और Louis de Alcazar जैसे लोगों का सटीक इतिहास अतीत में वाणी और प्रकाशन के माध्यम से सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया गया, तो उस इतिहास का उपयोग "पाप के मनुष्य" की सही समझ को रोकने के लिए किए गए शैतानी प्रयासों को दर्शाने के उद्देश्य से किया गया। इन शैतानी पद्धतियों की शुरुआत के उद्देश्य का भंडाफोड़ करने वाली लिखित या मौखिक गवाहियाँ जहाँ तक जाती हैं, वहाँ तक सही हैं, परन्तु शैतान

केवल उन बाइबलीय प्रमाणों को ही नहीं छिपाने का प्रयास कर रहा था जो मसीह-विरोधी की पहचान रोम के पोप के रूप में करते हैं, बल्कि उससे भी बढ़कर बातों को ढँकने का प्रयास कर रहा था।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में ऐसी सच्चाइयाँ हैं जिन्हें बाइबलीय व्याख्या की उन झूठी प्रणालियों द्वारा उत्पन्न भ्रम ने ढँक दिया है, जो उस व्यक्ति के विषय से हटकर हैं जिसकी संख्या छह, छह, छह है। उन सच्चाइयों में से एक निस्संदेह वह है जो तब प्रकट होती है जब सात कलीसियाओं को उनके पूर्णतम विकास में समझा जाता है। सात कलीसियाओं के भीतर ऐसी सच्चाइयाँ स्थित हैं जो सीधे उस इतिहास से संबंधित हैं, जो 11 सितंबर, 2001 को शुरू हुआ और रविवार कानून के संकट पर समाप्त होता है। शैतान इस प्रकाश को दबाकर रखने का प्रयास करता रहा है, और उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में निहित कई सत्य-मणियों—केवल रोम के पोप की मसीह-विरोधी के रूप में पहचान ही नहीं—को धुंधला करने के लिए शैतानी पद्धतियाँ गढ़ीं।

538 में "पाप का मनुष्य" प्रकट होने से पहले, युसेबियस और विक्टोरिनस जैसे लोगों ने पापाई सत्ता के उदय को छिपाने के प्रयास में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर आक्रमण किया। बाद में इतिहास में, मसीह ने थुआतीरा से की अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और सुधार-आंदोलन का "भोर का तारा" (विक्लिफ़) प्रकट किया, और उसके बाद शैतान ने अपने शैतानी कार्य का पक्ष लेने और उसे आगे बढ़ाने के लिए दो प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तियों को आगे लाया। सत्य के विकास को लेकर चला यह लंबा खिंचा हुआ संघर्ष, जो अपने चरम पर तब पहुँचता है जब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के रहस्य की मुहर खुल जाती है (ठीक कृपा का समय समाप्त होने से पहले), सात कलीसियाओं से आने वाले उस प्रकाश को भी समेटे हुए है, जिसे न तो मिलर ने कभी पहचाना, न ही बहन वाइट ने; परंतु यह आसानी से दिखाया जा सकता है कि मिलर और "भविष्यवाणी की आत्मा" दोनों नए प्रकाश का समर्थन करते हैं, क्योंकि नया प्रकाश कभी पुराने प्रकाश का विरोध नहीं करता।

यह एक तथ्य है कि हमारे पास सत्य है, और जिन सिद्धांतों को डिगाया नहीं जा सकता, उन्हें हमें दृढ़तापूर्वक थामे रहना चाहिए; परन्तु परमेश्वर जो कोई नया प्रकाश भेजे, उस पर हमें संदेह की दृष्टि नहीं रखनी चाहिए, और यह न कहना चाहिए, 'वास्तव में, हमें यह दिखाई नहीं देता कि अब तक जो पुराना सत्य हमें प्राप्त हुआ है, और जिसमें हम स्थिर हो गए हैं, उसके अतिरिक्त हमें किसी और प्रकाश की आवश्यकता है।' जब हम इस स्थिति पर बने रहते हैं, तब सच्चे साक्षी की गवाही हमारी दशा पर अपनी फटकार लागू करती है: 'और तू यह नहीं जानता कि तू अभागा, दयनीय, कंगाल, अंधा, और नंगा है।' जो लोग अपने को धनी और संपत्ति से समृद्ध मानते हैं, और जिन्हें किसी बात की आवश्यकता नहीं लगती, वे परमेश्वर के सामने अपनी वास्तविक दशा के संबंध में अंधेपन की अवस्था में हैं, और उन्हें इसका पता नहीं। Review and Herald, 7 अगस्त, 1894.

नई रोशनी के लिए प्राथमिक कसौटी यह है कि क्या वह स्थापित सत्य का खंडन करती है, और क्या वह आधारभूत सत्यों का समर्थन करती है।

"जब परमेश्वर की शक्ति यह साक्ष्य देती है कि सत्य क्या है, तो वह सत्य सदैव सत्य के रूप में बना रहना चाहिए। परमेश्वर ने जो प्रकाश दिया है, उसके विपरीत, बाद की कोई भी परिकल्पनाएँ विचार में नहीं लाई जानी चाहिए। मनुष्य शास्त्र की ऐसी व्याख्याएँ लेकर उठेंगे जो उनके लिए सत्य होंगी, परन्तु जो सत्य नहीं होंगी। इस समय के लिए सत्य परमेश्वर ने हमें हमारे विश्वास की नींव के रूप में दिया है। उसी ने स्वयं हमें सिखाया है कि सत्य क्या है। एक उठेगा, और फिर दूसरा भी, ऐसे नए प्रकाश के साथ जो उस प्रकाश का विरोध करता है जिसे परमेश्वर ने अपने पवित्र आत्मा के प्रदर्शन के अधीन दिया है।" चयनित संदेश, पुस्तक 1, 162.

जब से यूहन्ना ने उसमें निहित संदेशों को लिखा, शैतान ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को अपने हमलों का लक्ष्य बना रखा है। यीशु ने कहा:

परन्तु धन्य हैं तुम्हारी आँखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुम से सचमुच कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मी पुरुषों ने उन बातों को देखने की इच्छा की जिन्हें तुम देखते हो, पर उन्हें नहीं देखा; और उन बातों को सुनने की, जिन्हें तुम सुनते हो, पर उन्हें नहीं सुना। मत्ती 13:16, 17.

देखने और सुनने से मिलने वाली आशीष, यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य के संदेश को समझने की आशीष है। जब यूहन्ना, जो 'अंतिम दिनों' में संदेश को देखने और सुनने वालों का प्रतिनिधित्व कर रहा था, स्वर्गदूत गब्रिएल की आराधना करने के लिए गिर पड़ा, तो स्वर्गदूत गब्रिएल ने तुरंत यूहन्ना से कहा कि ऐसा न करे।

और मैं, यूहन्ना, ने ये बातें देखीं और उन्हें सुना। और जब मैंने सुन लिया और देख लिया, तब मैं उस स्वर्गदूत के चरणों पर आराधना करने के लिए गिर पड़ा, जिसने मुझे ये बातें दिखाईं। तब उसने मुझसे कहा, देख, ऐसा न कर; क्योंकि मैं तेरा, और तेरे भाइयों अर्थात् भविष्यद्वक्ताओं का, और उन लोगों का भी, जो इस पुस्तक के वचनों का पालन करते हैं, संगी दास हूँ; परमेश्वर की आराधना कर। प्रकाशितवाक्य 22:8, 9.

गैब्रियल और जॉन दोनों सृजित प्राणी हैं, जिन्हें केवल सृष्टिकर्ता की उपासना करनी है। कई भविष्यद्वक्ताओं और धर्मी पुरुषों ने, यहाँ तक कि स्वर्गदूतों ने भी, संसार के अंत में जब वह फिर से दोहराया जाएगा, तब 'मध्यरात्रि की पुकार' के संदेश को 'देखने' और 'सुनने' की इच्छा की है।

"मसीह ने कहा, 'धन्य हैं तुम्हारी आंखें, क्योंकि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, क्योंकि वे सुनते हैं। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और धर्मी पुरुषों ने उन बातों को देखने की इच्छा की जिन्हें तुम देखते हो, पर वे उन्हें देख न सके; और उन बातों को सुनने की, जिन्हें तुम सुनते हो, पर वे उन्हें सुन न सके' [मत्ती 13:16, 17]। धन्य हैं वे आंखें जिन्होंने 1843 और 1844 में जो देखा गया, उसे देखा।"

"संदेश दिया गया था। और संदेश को दोहराने में कोई विलंब नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय के चिन्ह पूरे हो रहे हैं; समापन का कार्य पूरा किया जाना चाहिए। थोड़े समय में एक महान कार्य किया जाएगा। परमेश्वर द्वारा ठहराए अनुसार शीघ्र ही एक संदेश दिया जाएगा, जो बढ़ते-बढ़ते एक प्रबल पुकार बन जाएगा। तब दानियेल अपने भाग में खड़ा होगा, अपनी गवाही देने के लिए।" Manuscript Releases, खंड 21, 437.

जो धर्मी पुरुष (यूहन्ना) और उनके सह-दास (स्वर्गदूत) देखना चाहते थे, वह एडवेंटवाद के अंत में आधी रात की पुकार की अंतिम पूर्ति थी, जब पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से आलोकित हो जाएगी। परवर्ती वर्षा में शक्ति का वह अंतिम प्रगटीकरण यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की मुहरों के खुलने से होता है।

जिस उद्धार के विषय में भविष्यद्वक्ताओं ने पूछताछ की और बड़े यत्न से खोज की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में भविष्यद्वक्ताओं की जो तुम्हारे लिए आने वाला था; वे खोजते थे कि वह कौन-सा, या किस प्रकार का समय था जिसका संकेत उनमें विद्यमान मसीह का आत्मा देता था, जब वह पहले से मसीह के दुःखों और उसके बाद होने वाली महिमा की गवाही देता था। उन्हें यह प्रगट किया गया कि वे ये बातें अपने लिए नहीं, परन्तु हमारे लिए सेवकाई कर रहे थे, वे बातें जो अब तुम्हें उन लोगों के द्वारा सुनाई गई हैं जिन्होंने स्वर्ग से भेजे गए पवित्र आत्मा के साथ तुम्हें सुसमाचार सुनाया है; जिन बातों को स्वर्गदूत देखने की इच्छा रखते हैं। इसलिए अपने मन की कमर कस लो, सचेत और संयमी रहो, और उस अनुग्रह पर जो यीशु मसीह के प्रगट होने पर तुम्हें प्राप्त होगा, अंत तक आशा रखो। 1 पतरस 1:10-13.

भविष्यद्वक्ता, धर्मी जन और स्वर्गदूतों ने उस समय में जीने की इच्छा की है, जब "अनुग्रह", अर्थात् परमेश्वर की शक्ति, आधी रात की पुकार की अंतिम पूर्ति के दौरान उंडेली जाती है। वही "अनुग्रह", जो परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति है, मनुष्यों तक तब पहुँचाया जाता है जब "यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य" की मुहर खोली जाती है। शैतान जानता है कि अपने लोगों तक परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति पहुँचाने का माध्यम, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मुहर खुलने पर प्रकट होने वाले संदेश के द्वारा सम्पन्न होता है, और इसलिए उसका सर्वोपरि प्रयास यही रहा है कि वह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में निहित प्रकाश को भ्रमित कर दे, दबा दे और ढँक दे। वह प्रकाश केवल "पाप के मनुष्य" की पहचान भर नहीं है, क्योंकि वह सत्य सदियों पहले सभी प्रोटेस्टेंट सुधारकों द्वारा भली-भाँति सिद्ध किया जा चुका है।

प्रभु के दिन मैं आत्मा में था, और अपने पीछे तुरही के समान एक बड़ी ध्वनि सुनी, जो कहती थी, मैं अल्फा और ओमेगा हूँ, पहला और आखिरी; और जो कुछ तू देखता है, उसे एक पुस्तक में लिख, और उसे एशिया की सात

कलीसियाओं को भेज— इफिसुस, स्मुर्ना, पर्गामोस, थुआतीरा, सार्दिस, फिलाडेल्फिया और लाओदीकिया को। तब मैं उस आवाज़ को देखने के लिए मुड़ा जो मुझसे बोल रही थी; और मुड़कर मैंने सात सुनहरे दीवट देखे; और उन सात दीवटों के बीच एक मनुष्य के पुत्र के समान, जो पांव तक का वस्त्र पहने था, और उसकी छाती पर सोने का पटका बंधा था। उसका सिर और उसके बाल ऊन के समान सफ़ेद, जैसे हिम के समान उजले थे; और उसकी आंखें आग की ज्वाला के समान थीं; और उसके पांव भट्टी में तपे हुए चमकीले पीतल के समान थे; और उसकी आवाज़ बहुत-से जलों की ध्वनि के समान थी। और उसके दाहिने हाथ में सात तारे थे; और उसके मुंह से एक तीखी दोधारी तलवार निकलती थी; और उसका मुख अपने पराक्रम में चमकते सूर्य के समान था। और जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके पांवों पर मानो मरा हुआ गिर पड़ा; तब उसने अपना दाहिना हाथ मुझ पर रखकर मुझसे कहा, मत डर; मैं पहला और आखिरी हूँ; मैं जीवित हूँ, और मर गया था; और देख, मैं युगानुयुग जीवित हूँ; आमीन; और अधोलोक और मृत्यु की कुजियाँ मेरे पास हैं। जो बातें तू देख चुका है, और जो हैं, और जो इसके बाद होने वाली हैं, उन्हें लिख। प्रकाशितवाक्य 1:10-19.

जब एडवेंटिज़्म 'ऐतिहासिकतावादी' पद्धति पर कायम था, तब वे यह मानते थे कि प्रकाशितवाक्य के अध्याय दो और तीन की सभी कलीसियाएँ अंतिम कलीसिया में दोहराई जाती हैं। दुर्भाग्यवश, उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक शैतान एडवेंटिज़्म की आंखें उस पवित्र पद्धति, उसके संरक्षण और उसके अनुप्रयोग से पहले ही मूढ़ रहा था—हालाँकि ये सब 'भविष्यद्वाणी के महान सत्यों के भंडारियों' के रूप में उनकी ज़िम्मेदारी के अनिवार्य अंग थे। जब एडवेंटिज़्म में उस पद्धति को किनारे रखा जा रहा था, तब भी कुछ लोग ऐसे थे जो उस पवित्र पद्धति को लागू करते रहे। हम पुस्तक "Story of the Seer of Patmos" का उपयोग इस तथ्य की गवाही के रूप में करते हैं कि समस्त कलीसियाओं को लौदीकिया के इतिहास पर लागू करना भविष्यद्वाणी का एक वैध अनुप्रयोग है। नीचे उस पुस्तक से कुछ अंश दिए जा रहे हैं, जो उस बात को स्पष्ट करते हैं जिसकी ओर मैं संकेत कर रहा हूँ।

"यह स्मरण रखना चाहिए कि, जिस प्रकार मसीह के दूसरे आगमन से पहले की अंतिम कलीसिया में इफिसुस, स्मिर्ना और पर्गामोस के अनुभव फिर से दोहराए जाएंगे, उसी प्रकार थुआतीरा का इतिहास अंतिम पीढ़ी में अपना प्रतिरूप पाएगा।" स्टीफन एन. हैस्केल, पत्मोस के द्रष्टा की कथा, 69.

हैस्केल सही तौर पर यह इंगित करते हैं कि पहली चार कलीसियाओं का अनुभव दोहराया जाता है, या जैसा कि वे कहते हैं, 'उसका समकक्ष अंतिम पीढ़ी में होगा।'

"उसने परीक्षण लागू किया, पर सब कुछ सन् 1843 की ओर संकेत कर रहा था, उस समय के रूप में जब संसार को अपने उद्धारकर्ता का स्वागत करना था। मसीह के प्रथम आगमन के समय लोगों की जो स्थिति थी, वही अब पुनः उत्पन्न हो गई थी।" Stephen N. Haskell, Story of the Seer of Patmos, 75.

हैस्केल यह कह रहे थे कि विलियम मिलर ने 1843 को मसीह के दूसरे आगमन के रूप में पहचाना, और वे यह भी बताते थे कि प्रथम आगमन की परिस्थितियाँ मिलराइटों के समय दोहराई गई थीं। हैस्केल सही थे, और सिस्टर वाइट पुष्टि करती हैं कि स्वयं मिलर का प्रतिनिधित्व यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले द्वारा किया गया था।

"जैसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यीशु के प्रथम आगमन की घोषणा की और उसके आगमन के लिए मार्ग तैयार किया, उसी प्रकार विलियम मिलर और उसके साथ जुड़ने वालों ने परमेश्वर के पुत्र के द्वितीय आगमन की घोषणा की।" Early Writings, 229.

हैस्केल यह भी बताता है कि पर्गामोस के इतिहास के दौरान (तीसरी कलीसिया, जो मूर्तिपूजा के साथ ईसाई धर्म के समझौते का प्रतिनिधित्व करती है), सार्दिस, पाँचवीं कलीसिया, का इतिहास दोहराया गया।

"पर्गामोस के इतिहास में एक समय था, जब ईसाई धर्म ने सोचा कि पैगनवाद मर चुका है; पर वास्तव में, जो धर्म ऊपर-ऊपर से पराजित प्रतीत होता था, वही विजयी हो गया था। पैगनवाद ने बपतिस्मा लेकर कलीसिया में प्रवेश कर लिया। सार्दिस के दिनों में यह इतिहास दोहराया गया।" स्टीफन एन. हैस्केल, स्टोरी ऑफ द सीयर ऑफ पैटमॉस, 75, 76.

सार्दिस सुधार आंदोलन की वह कलीसिया थी, जो जाग उठी और पोपतंत्र की शैतानी भ्रांतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाई, पर अपना कार्य पूरा होने से पहले ही वे रोम की ओर लौटने लगे थे। उन्होंने, पर्गामोस की कलीसिया की तरह, यह समझा कि पोपतंत्र मर चुका है, पर वास्तव में वह अभी भी जीवित था। हेस्केल यह भी इंगित करते हैं कि अवशिष्ट कलीसिया पर "बीते हुए सभी युगों की संचित किरणें" चमकती हैं।

"इस अंतिम कलीसिया—अवशेष—पर, समस्त पूर्व युगों की संचित किरणें चमकती हैं।" Stephen N. Haskell, पटमोस के द्रष्टा की कथा, 69.

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि हेस्केल ने यह पहचाना था कि सात कलीसियाओं द्वारा निरूपित क्रमिक इतिहास की पूर्ति प्राचीन इस्राएल के इतिहास में भी हुई थी, परंतु जब वह लिखते हैं कि "गत सभी युगों की संचित किरणें" "अंतिम कलीसिया" पर "चमकती" हैं, तब वह निस्संदेह उस सत्य का समर्थन करते हैं। प्राचीन इस्राएल "गत युगों" की "किरणों" में शामिल है। और यद्यपि वह उन सिद्धांतों का समर्थन करते हैं जो प्राचीन इस्राएल के इतिहास में सात कलीसियाओं के प्रतीकवाद को पहचानने के लिए आवश्यक हैं, मुझे यह सुनिश्चित नहीं है कि उन प्रतीकों में निरूपित समानताओं को उन्होंने किस हद तक पहचाना। मुझे यह भी विश्वास है कि सात कलीसियाओं द्वारा निरूपित इतिहासों के एक और भी अधिक महत्वपूर्ण पहलू को उन्होंने नहीं पहचाना, वह पहलू जिसकी ओर हम बढ़ रहे हैं।

हम अपने अगले लेख में इस सत्य पर चर्चा करेंगे।